बकरी उत्पादन व व्यावसायीकरण

सेवाप्रदाता के लिये मार्गदर्शिका

BAIF DEVELOPMENT RESEARCH FOUNDATION

CGIAR

ILRI
INTERNATIONAL LIVESTOCK RESEARCH INSTITUTE

European Commission

IFAD
Enabling poor rural people to overcome poverty

© 2013 BAIF and International Livestock Research Institute (ILRI)

This publication is copyrighted by the International Livestock Research Institute (ILRI). It is licensed for use under the Creative Commons Attribution-Noncommercial-Share Alike 3.0 Unported License. To view this license, visit http://creativecommons.org/licenses/by-nc-sa/3.0/. Unless otherwise noted, you are free to copy, duplicate, or reproduce, and distribute, display, or transmit any part of this publication or portions thereof without permission, and to make translations, adaptations, or other derivative works under the following conditions:

	ATTRIBUTION. Thework must beattributed, butnot in anywaythatsuggestsendorsementby ILRI ortheauthor(s).
	NON-COMMERCIAL. This work may not be used for commercial purposes.
	SHARE ALIKE. If this work is altered, transformed, or built upon, the resulting work must be distributed only under the same or similar license to this one.

NOTICE:

- For any reuse or distribution, the license terms of this work must be made clear to others.
- Any of the above conditions can be waived if permission is obtained from the copyright holder.
- Nothing in this license impairs or restricts the author's moral rights.
- Fair dealing and other rights are in no way affected by the above.
- The parts used must not misrepresent the meaning of the publication. ILRI would appreciate being sent a copy of any materials in which text, photos etc. have been used.

Authors: Bendapudi R. (ILRI), Rathod B.G. (BAIF-RRIDMA), Patel R.B. (BAIF-RRIDMA), Hendrickx S.C.J. (ILRI)

Illustrations: Narendra Singh

Revision and edition: 1

92-9146-336-1

Correctcitation: Bendapudi R., Rathod B.G., Patel R.B., Hendrickx S.C.J. 2013.Production and Commercialization of Goats – Manual for community level service providers ILRI (International Livestock Research Institute), Nairobi, Kenya and BAIF, Pune, India.

ilri.org

better lives through livestock

ILRI is a member of the CGIAR Consortium

Box 30709, Nairobi 00100, Kenya
Phone: + 254 20 422 3000
Fax: +254 20 422 3001
Email: ILRI-Kenya@cgiar.org

AgarwalCorporateTower, New Delhi
Phone: +91 11 6621 9292
Fax: +91 11 2560 9814
Email: ILRI-Delhi@cgiar.org

यह पुस्तिका बकरियों के उत्पादन व व्यवसायीकरण के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रेषित करने में समुदाय स्तर के सेवा प्रदाताओं (फील्ड गाइड) की मदद करने के लिए विकसित की गई है। पुस्तिका में कई चित्र हैं, जो बकरी पालन के मुख्य मुद्दों के बारे में उत्पादकों के साथ चर्चा करने में मदद करते हैं।

सेवा प्रदाता (फील्ड गाइड) उत्पादकों से चित्रों के बारे में पूछकर और उनकी प्रतिक्रिया के अनुसार बातचीत शुरू कर सकते हैं। उस आधार पर सेवा प्रदाता (फील्ड गाइड) मुख्य मुद्दों के बारे में सवाल करके चर्चा जारी रख सकते हैं। इस चर्चा का उद्देश्य बकरी पालकों के उत्पादन और व्यवसायीकरण के ज्ञान में सुधार और सेवाओं को प्राप्त करने में मदद मिलना है।

यह पुस्तिका आई. एम. गोट परियोजना के तहत तैयार की गई है। यह परियोजना यूरोपियन कमीशन द्वारा आई. एफ. ए. डी. (IFAD) की वित्तीय सहायता से बायफ एवम् आइ.एल.आर.आई (ILRI) क्रियान्वित की गई है। इस पुस्तिका को बायफ की बकरी पालन सम्बन्धित अन्य पुस्तिकाओं के आधार पर विकसित किया गया है।

इस पुस्तिका में चित्रांकन श्री नरेन्द्र सिंह जी द्वारा किया गया है।

विषय सूची

चित्र 1 : नस्ल सुधार	पृष्ठ–4
चित्र 2 : बधियाकरण	पृष्ठ–6
चित्र 3 : ग्याभिन बकरी की देखभाल	पृष्ठ–8
चित्र 4 : नवजात बच्चों की देखभाल	पृष्ठ–10
चित्र 5 : बकरीयो मे दस्त	पृष्ठ–12
चित्र 6 : बकरीयों में आंतरिक परजीवी	पृष्ठ–14
चित्र 7 : आंतरिक परजीवी के प्रकार	पृष्ठ–16
चित्र 8 : आंतरिक परजीवी का परीक्षण	पृष्ठ–18
चित्र 9 : बाह्य परजीवी	पृष्ठ–20
चित्र 10 : बकरीयों के प्रमुख रोग	पृष्ठ–22
चित्र 11.1 : सामान्य बीमारियाँ मुंह रोग (कंटेजियस एक्थाईमा)	पृष्ठ–24
चित्र 11.2 : सामान्य बीमारियाँ आफरा	पृष्ठ–26
चित्र 11.3 : सामान्य बीमारियाँ पैर सड़ना (खुर गलन, फुट रोट)	पृष्ठ–28
चित्र 12 : चारा खिलाने का तरीका	पृष्ठ–30
चित्र 13 : बकरी का आवास	पृष्ठ–32
चित्र 14 : बाजार व्यवस्था	पृष्ठ–34
चित्र 15 : संगठित बाजार व्यवस्था	पृष्ठ–36
चित्र 16 : स्वयं सहायता समूह	पृष्ठ–38
चित्र 17 : बकरी विकास मंच (इनोवेशन प्लेटफोर्म)	पृष्ठ–40

चित्र 1: नस्ल सुधार

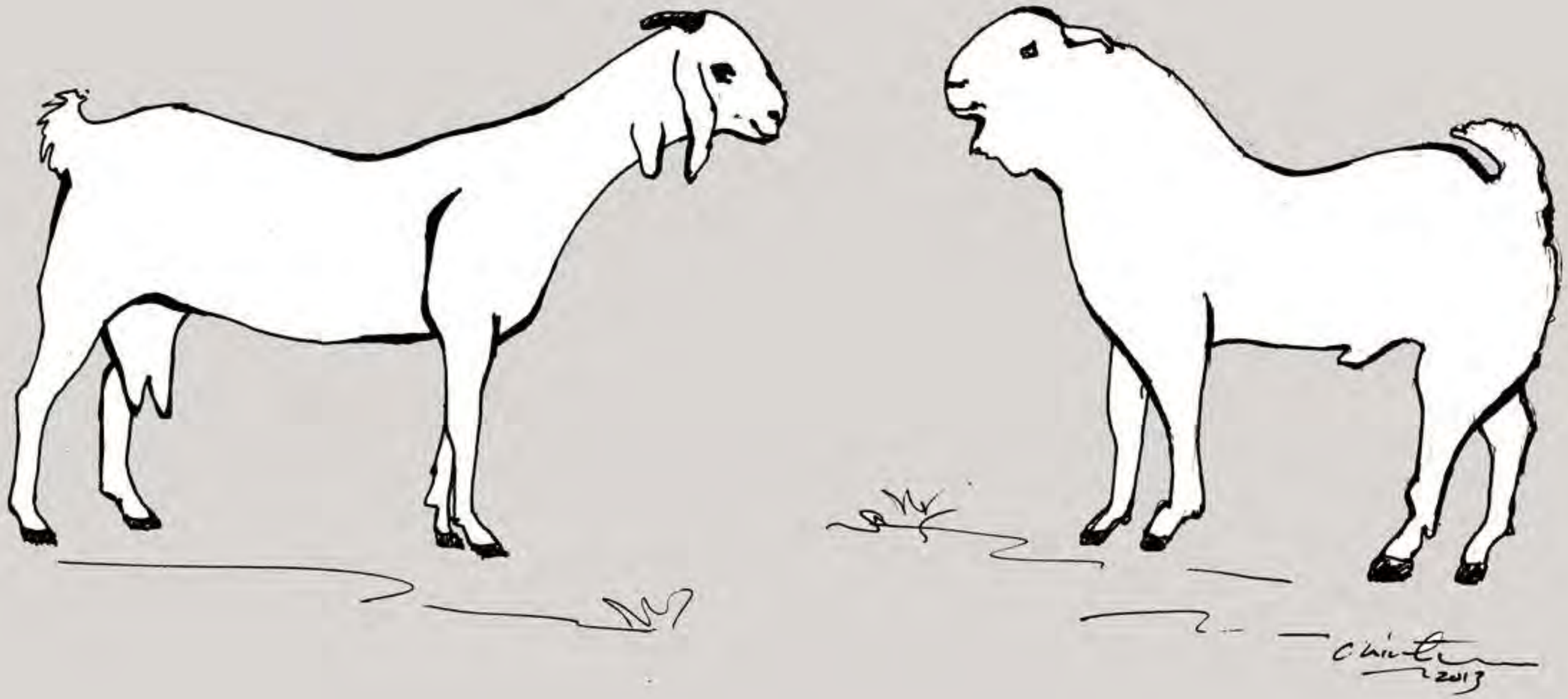

चित्र 1: नस्ल सुधार

बकरीयों मे नस्ल सुधार कैसे कर सकते है ?

- *समूह में उच्च कोटि का बकरा जिसकी माँ ज्यादा दुग्ध उत्पादन देती हो व जिसकी शारीरिक वृद्धि उच्छी हो, प्रजनन हेतु रखें।*
- *30 बकरियों के लिये एक बीजू बकरा रखें।*
- *अपने रेवड़ में कम उत्पादन वाली बकरियों के स्थान पर अधिक दुग्ध उत्पादन देने वाली बकरियों के मादा बच्चो को रखें ।*
- *अन्तः प्रजनन रोकने हेतु दो वर्ष पश्चात बीजू बकरे का फेरबदल करें।*
- *अवांछित नर बकरों का बधियाकरण करें।*

चित्र 2: बधियाकरण

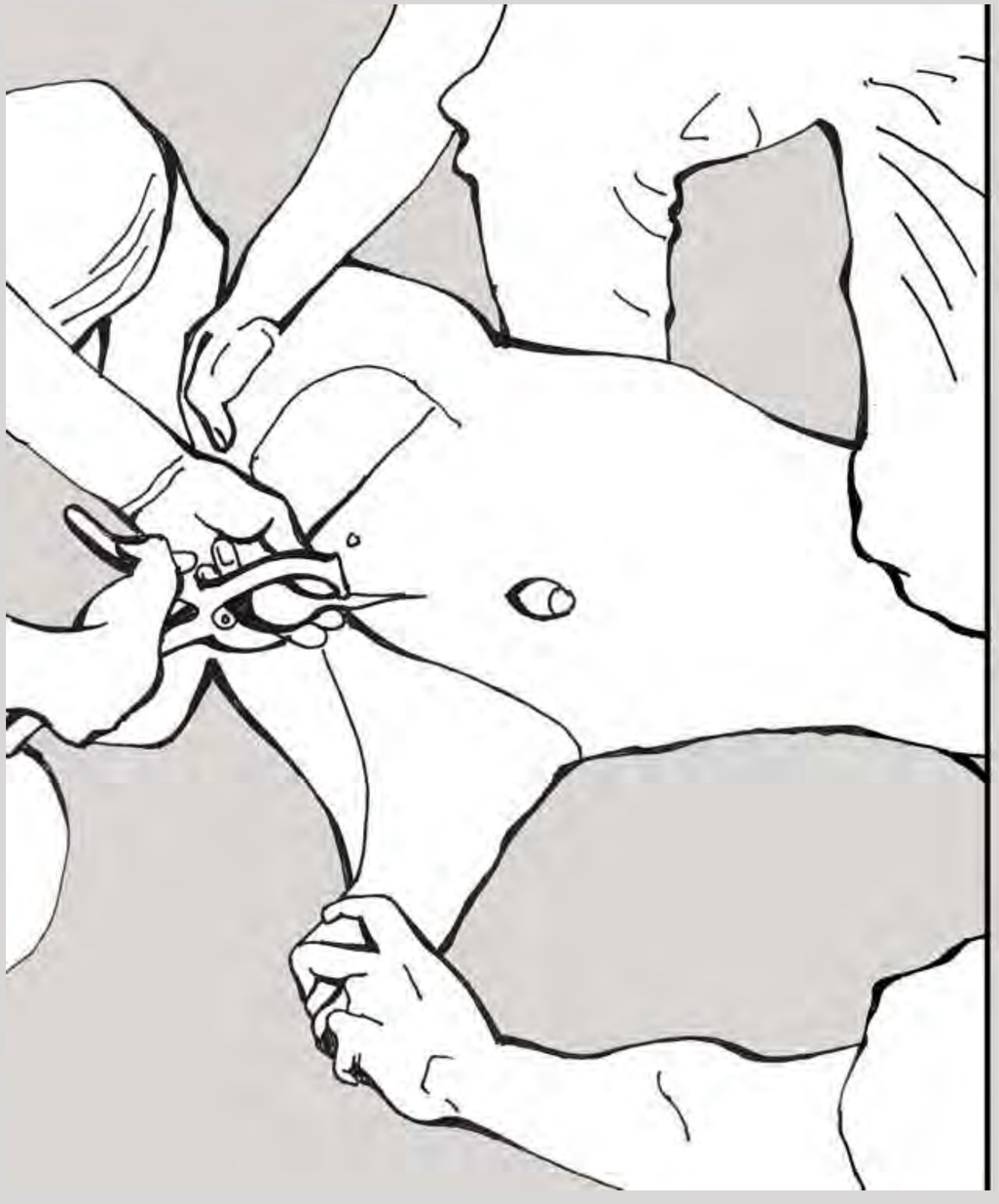

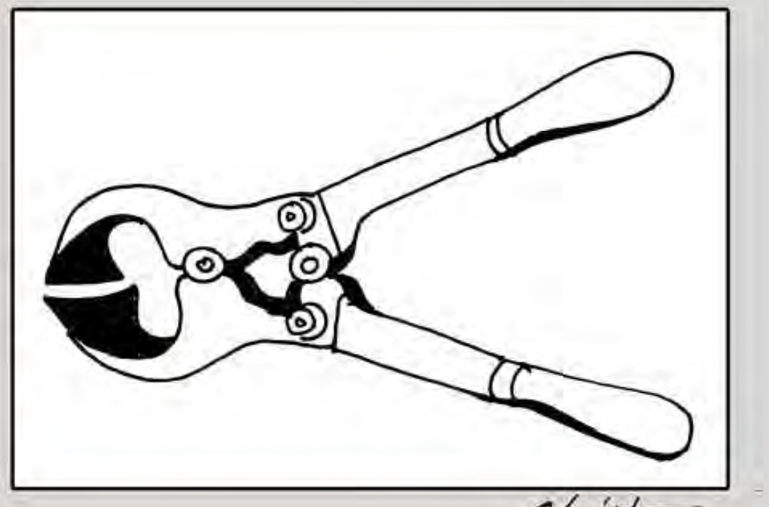

चित्र 2: बधियाकरण

बधियाकरण क्या है ?

➢ नर बकरे की प्रजनन क्षमता पर उचित विधि द्वारा रोक लगाना।

इसके लाभ क्या हैं ?

➢ बकरों की शारीरिक वृद्धि तेजी से होती है। ज्यादा वजन–अधिक आय।

➢ बकरा शांत हो जाता है। संभालनें में आसानी।

➢ मांस नरम व उच्च गुणवत्ता का होता है।

➢ बधियाकृत नर को व्यापारी खरीदनें में प्राथमिकता देते हैं एवं आय भी अधिक होती है।

चित्र 3: ग्याभिन बकरी की देखभाल

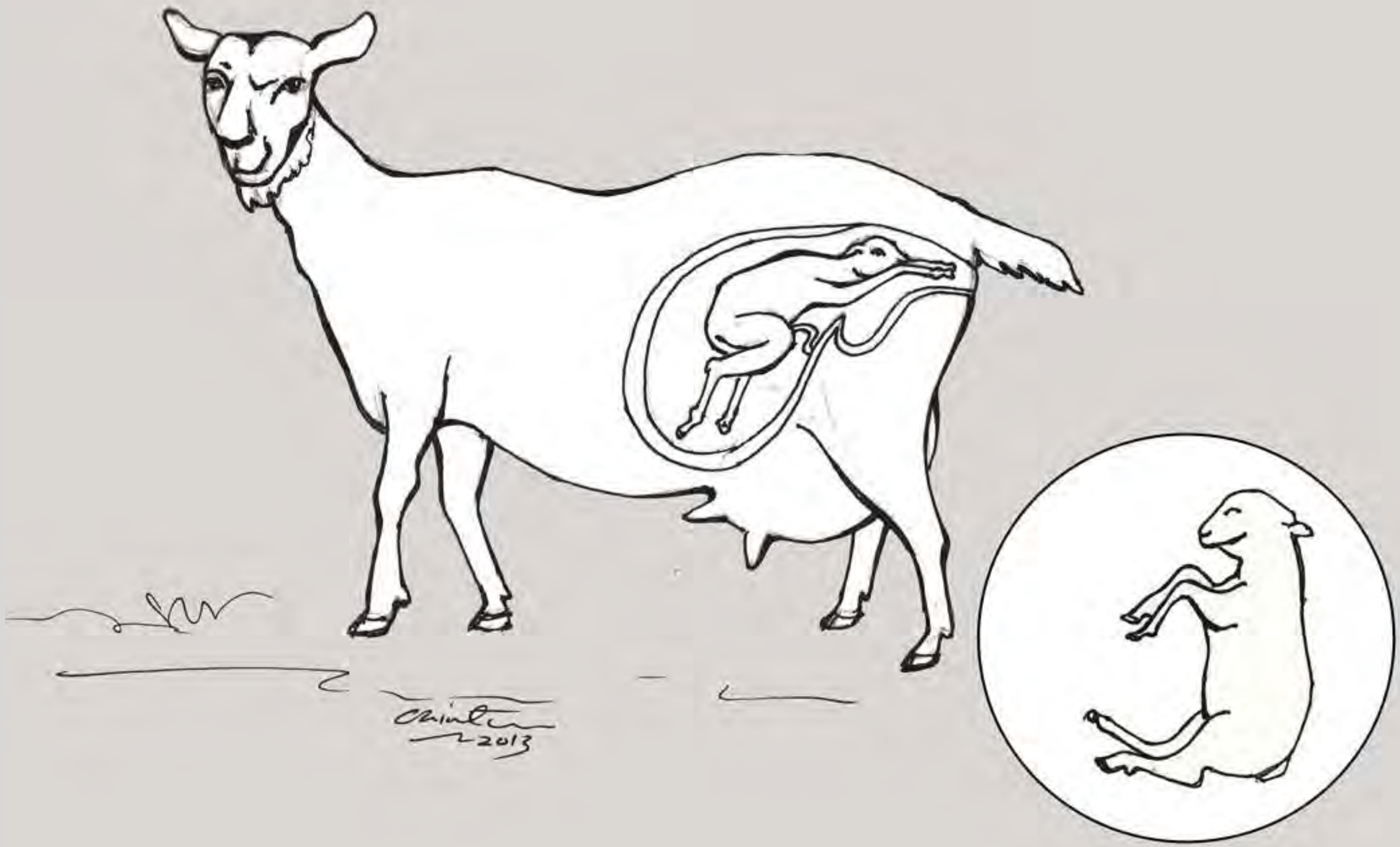

चित्र 3: ग्याभिन बकरी की देखभाल

ग्याभिन बकरी की देखभाल कैसे करेंगे ?

- *ग्याभिन बकरियों को बकरों से अलग रखें।*
- *गर्भावस्था के आखरी दो माह प्रतिदिन 250 ग्राम पशु आहार के साथ मिनरल मिक्चर भी दें।*
- *ब्याहने के 3 से 4 दिन पहले घर पर रखकर चारा देवें व चराई पर नही भेजें।*
- *ग्याभिन बकरियों को सूखी एवं साफ जगह पर व सूखे घास के बिछावन पर रखें।*
- *3 माह की गर्भ अवस्था में गर्भपात होने पर डॉक्टर से सम्पर्क करें व प्रयोगशाला में दूध का परीक्षण करावें।*

चित्र 4 : नवजात बच्चों की देखभाल

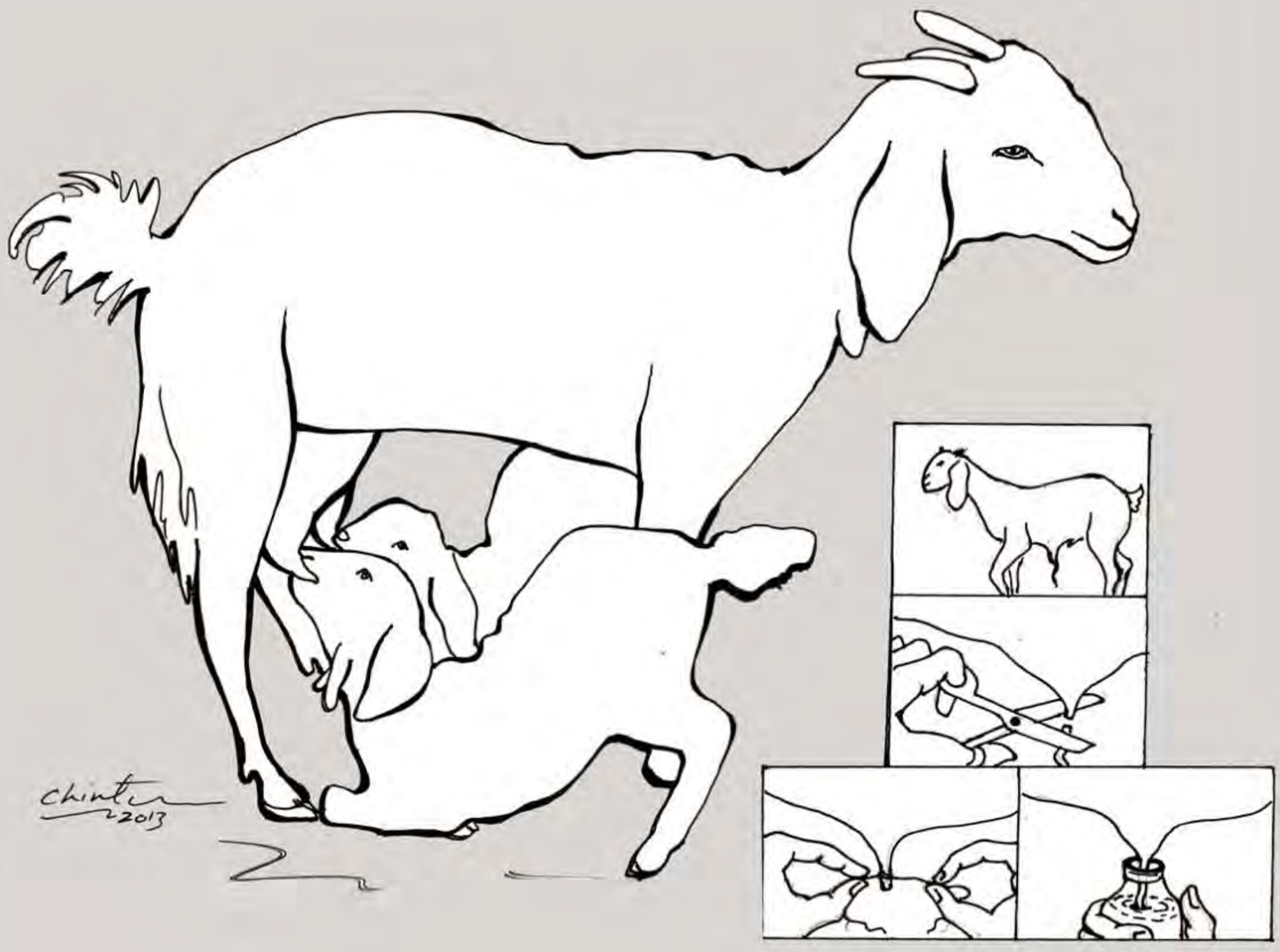

चित्र 4 : नवजात बच्चों की देखभाल

जन्म के तुरन्त बाद बच्चे की देखभाल कैसे करे ?

- जन्म के तुरन्त बाद बच्चे को साफ करें।
- बच्चे के नाल को 2 इंच की दूरी से कैंची से काटें ।
- नल को धागे से बांधे ।
- उस के पश्चात टींचर आयोडीन लगायें।
- बच्चे को जन्म के 1 घंटे के अंदर माँ का प्रथम दूध (खीस) पिलावें।

चित्र 5 : बकरीयो मे दस्त

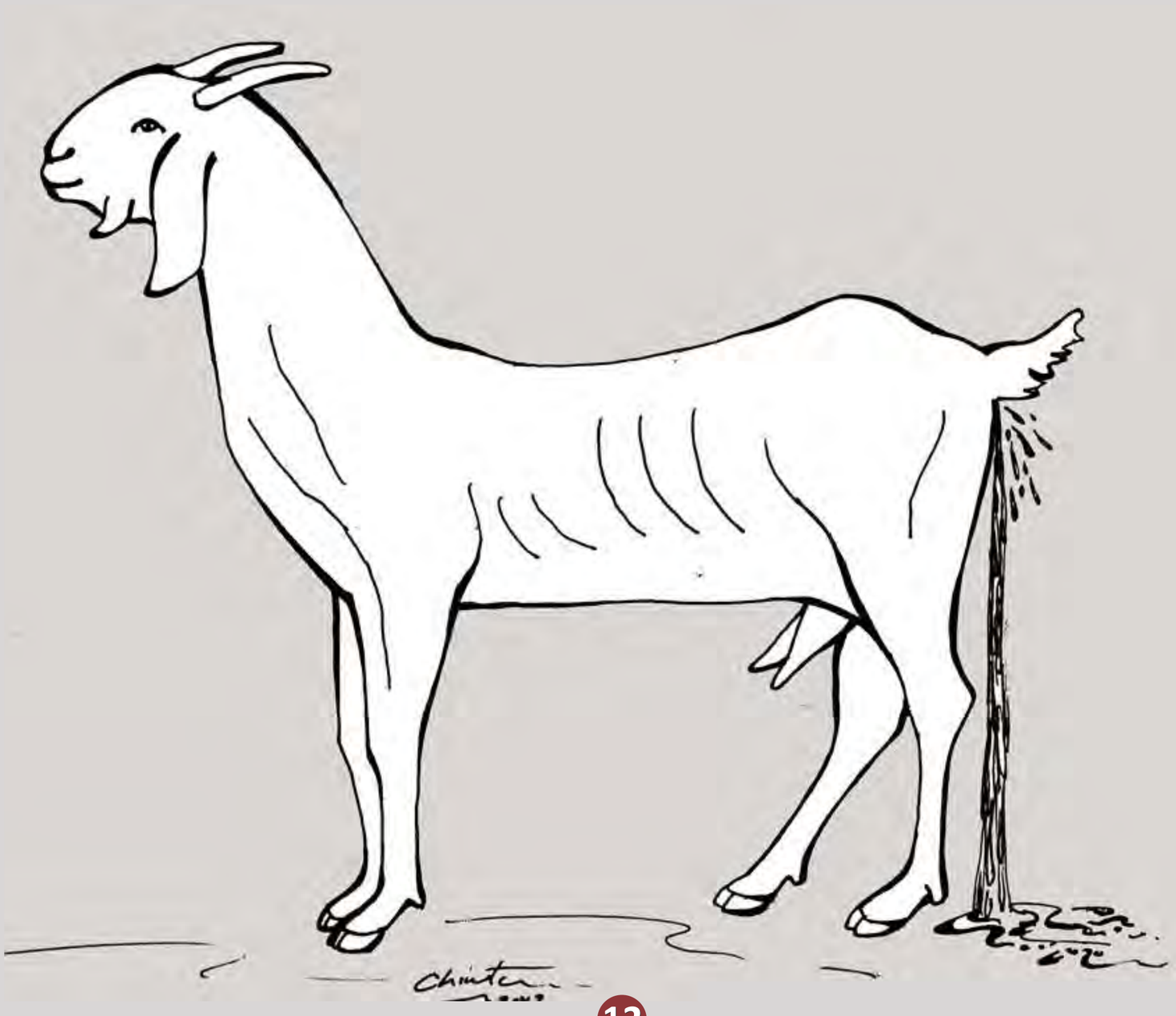

चित्र 5 : बकरीयो मे दस्त

छेरा (दस्त) क्यों होता है?

- बकरी के शरीर में कृमि का प्रभाव ज्यादा है।
- कृमि की वजह से शारीरिक कमजोरी है।

चित्र 6 : बकरीयों में आंतरिक परजीवी

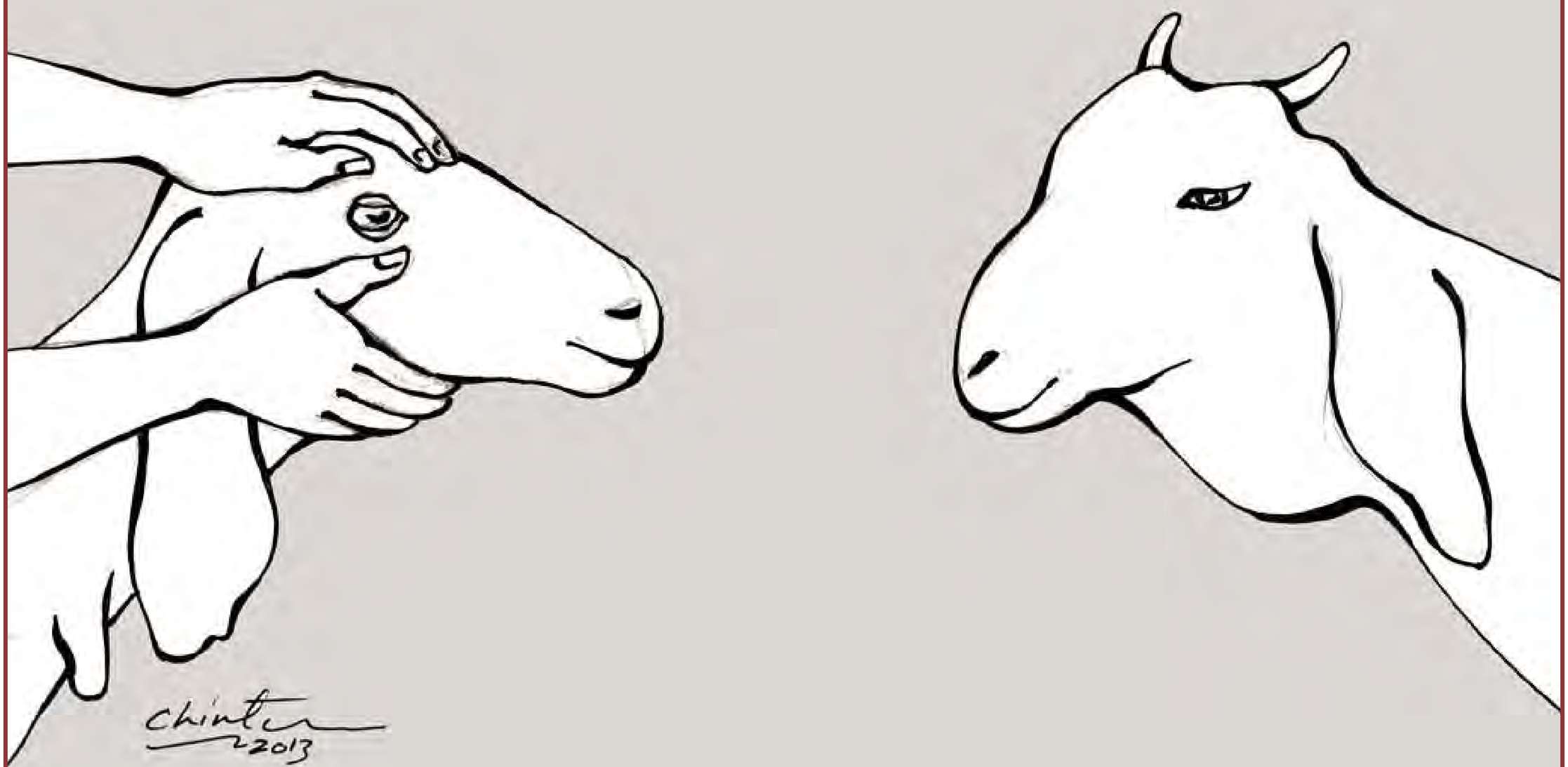

चित्र 6 : बकरीयों में आंतरिक परजीवी

शरीर में कृमि होने के लक्षण क्या है ?

- खून की कमी शरीर में कृमि होने का संकेत देती है।
- खून की कमी को जानने के लिये आंखो का परीक्षण करें।
- गले के नीचे के हिस्से मे सूजन दिखना, कृमि होने का संकेत देता है।
- कृमी नाशक दवाई पिलाइये।

चित्र 7 : आंतरिक परजीवी के प्रकार

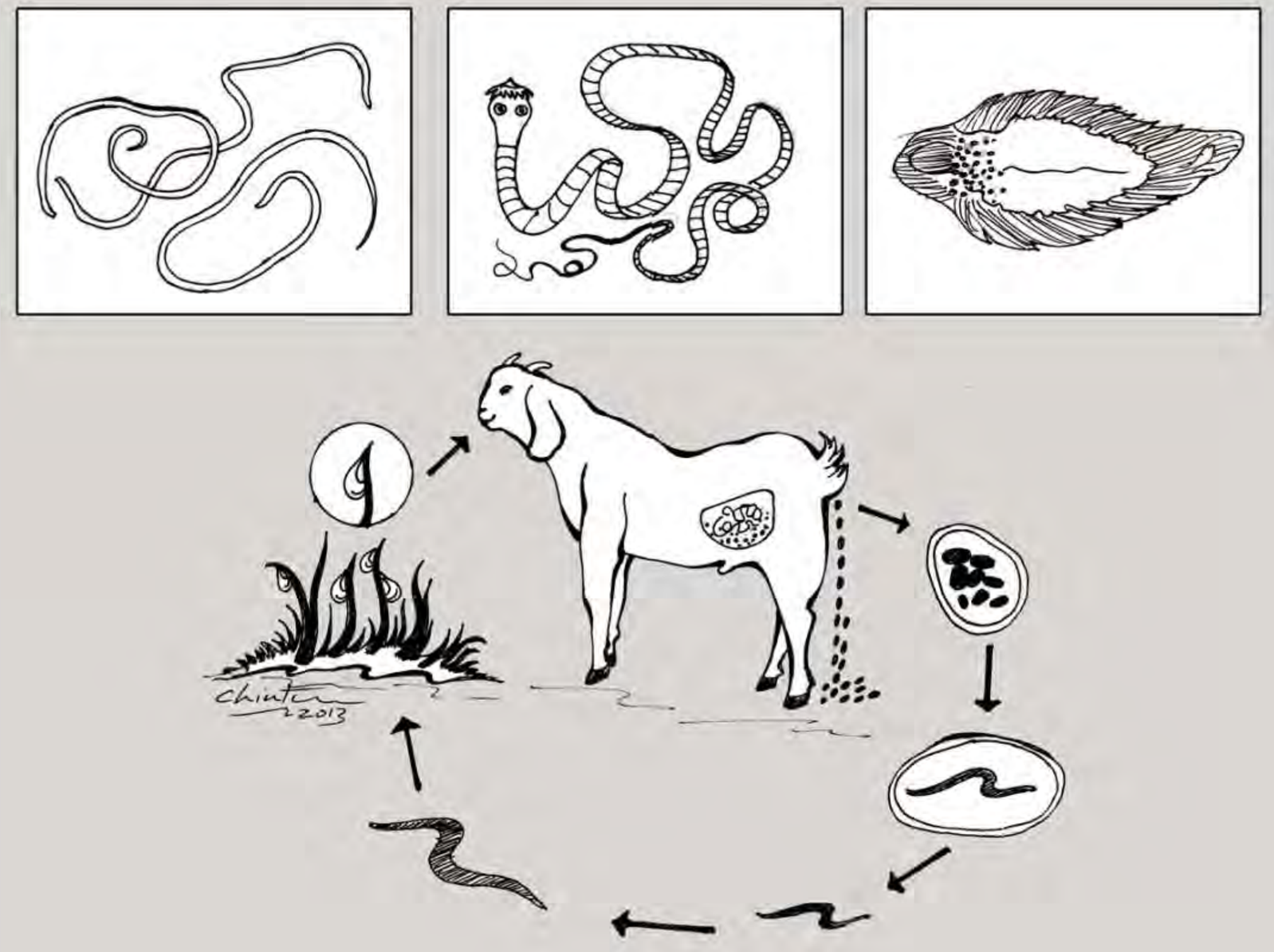

चित्र 7 : आंतरिक परजीवी के प्रकार

कृमि (कीड़े) कितने प्रकार के होते हैं ?

➢ कीडे तीन प्रकार के होते है।

1. गोल कृमि 2. फ़ित्ता कृमि 3. पत्ता कृमि

कृमि (कृमि का जीवन चक्र क्या है ? कैसे शरीर में पहुंचते हैं ?

➢ मींगनी के साथ कृमि के अण्डे शरीर से बाहर आते हैं।

➢ अण्डे से सूक्ष्म कीड़ा तैयार होता है, जो घास के ऊपर पनपता है।

➢ चराई के समय कृमि वापस शरीर में चले जाते हैं।

➢ शरीर में कृमि वयस्क होकर अण्डे देते हैं।

चित्र 8 : आंतरिक परजीवी का परीक्षण

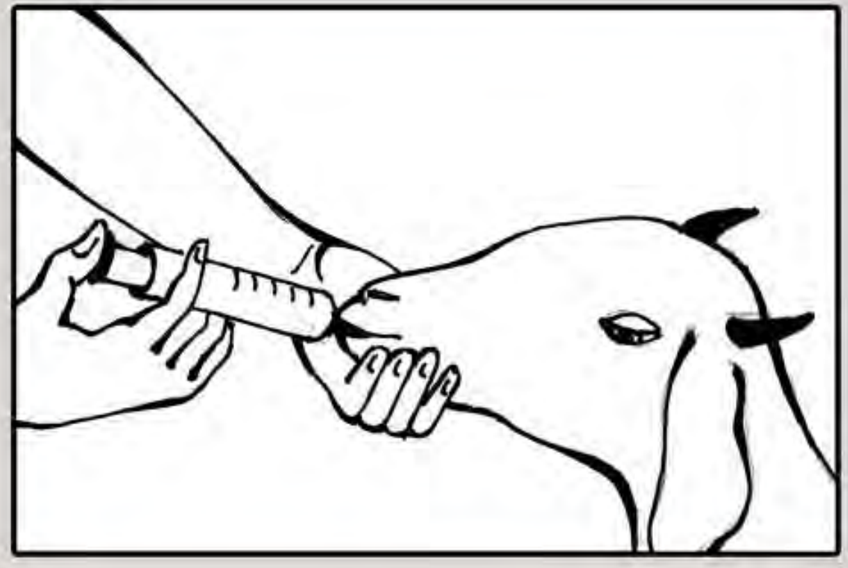

चित्र 8 : आंतरिक परजीवी का परीक्षण

कृमि की उपस्थिति का पता कैसे लगाते है?

- मींगनी की जांच करवाना।
- जिला स्तर पर पशुपालन विभाग की क्षेत्रिय पशु रोग निदान केन्द्र पर जांच करवा कर।

कृमि की रोकथाम

- प्रत्येक तीन माह के अंतराल पर प्रभावी कृमिनाशक दवाई पिलाना।
- बाड़े की नियमित रूप से सफाई।

चित्र 9 : बाह्य परजीवी

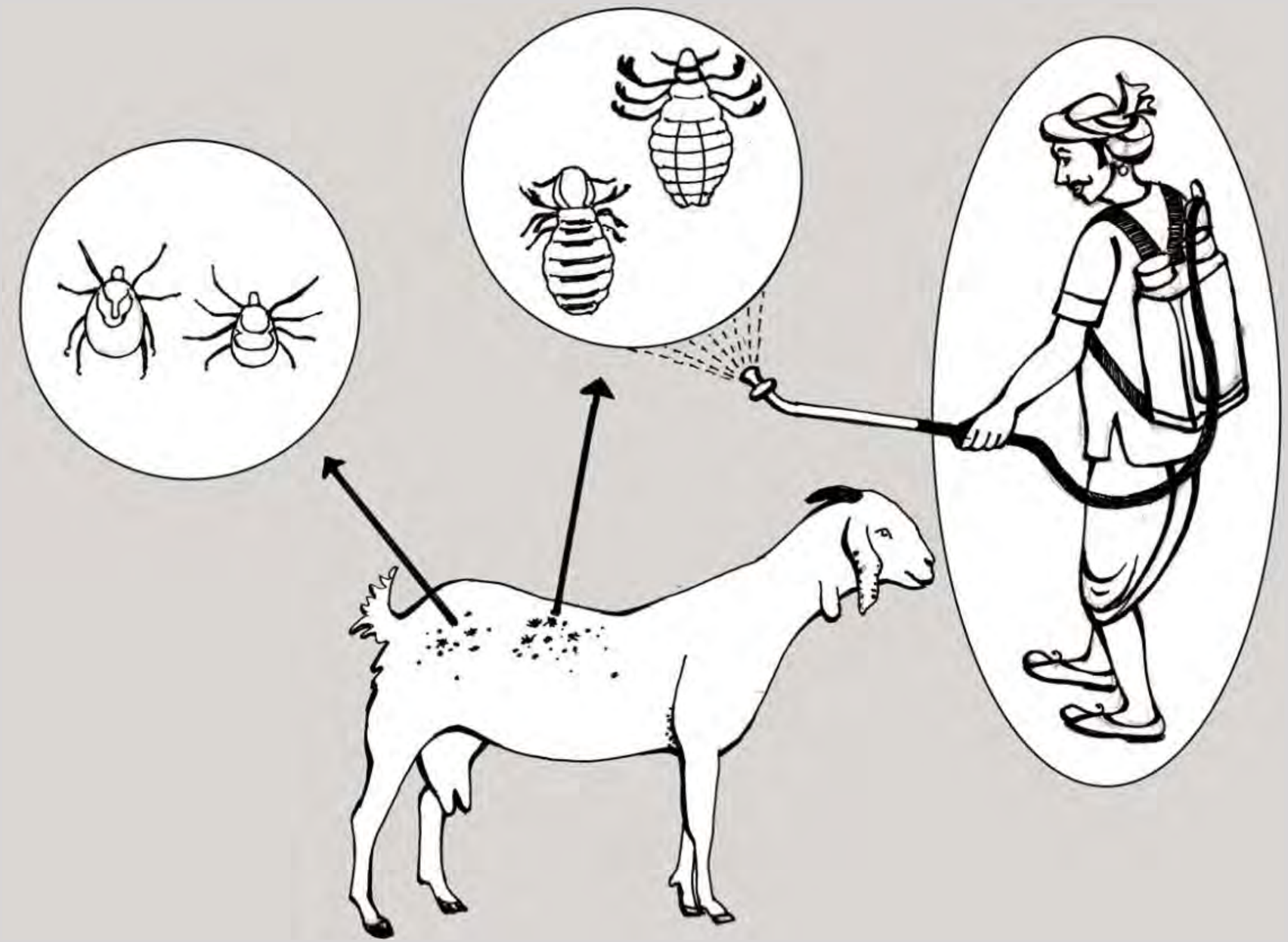

चित्र 9 : बाह्य परजीवी

बाह्य परजीवी क्या होते है व कितने प्रकार के होते हैं?

शरीर के ऊपर पाये जाने वाले जीव को बाह्य परजीवी कहते हैं। यह कई प्रकार के होते हैं।

1. जुंए 2. चीचडे (टीक्स) 3. गीलुड 4. बग्गा

इस के क्या लक्षण होते हैं?

- शरीर में खून की कमी
- दीवार से शरीर खुजलाना
- खुजली होना व बाल गिरना
- निस्तेज व रूखी-सूखी चमड़ी
- शारीरिक वृद्धि एवं उत्पादन में कमी

उपचार :

- बाडे की नियमित सफाई।
- तीन माह के अंतराल पर बाड़े की मिट्टी का बदलाव।
- बाड़े में 1 से 2 माह के अंतराल पर बिना बुझे चूने का छिंडकाव।
- बकरी के शरीर पर नियमित अंतराल पर बुटोक्स दवाई 2 एम.एल प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करावें।

चित्र 10 : बकरीयों के प्रमुख रोग

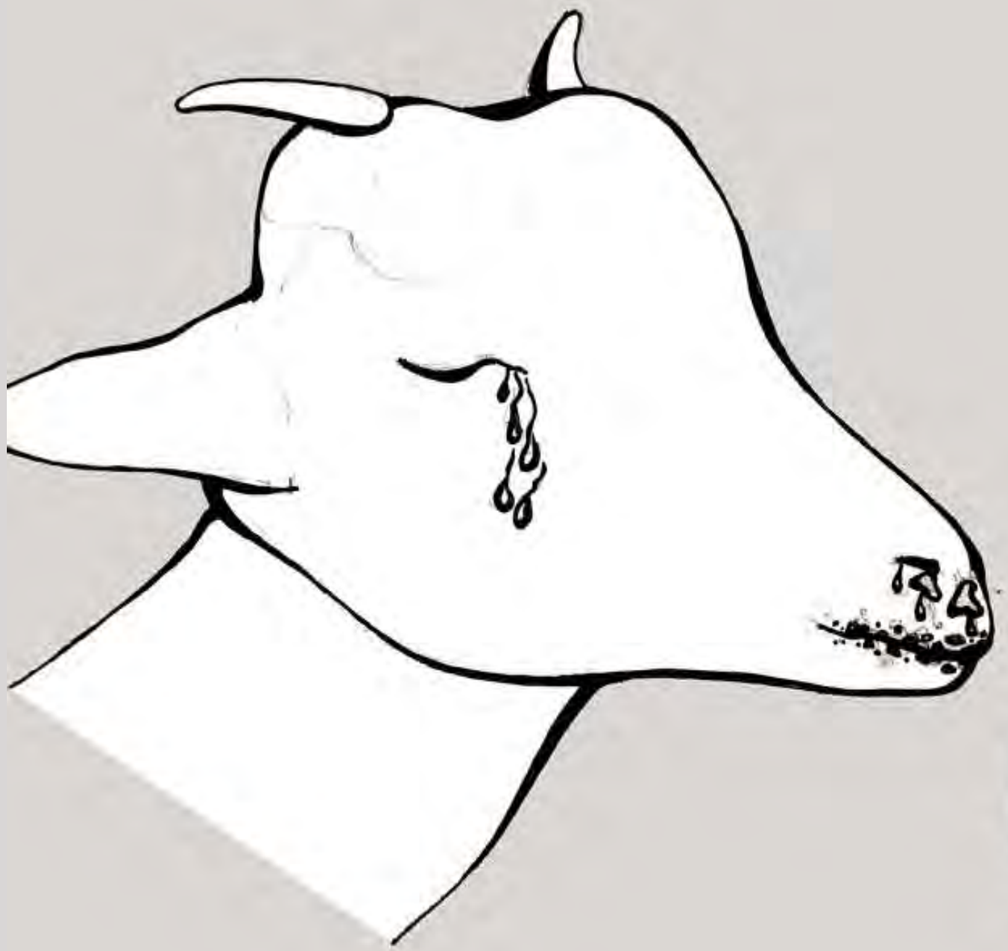

चित्र 10 : बकरीयों के प्रमुख रोग

बकरियों में कौन से प्रकार के रोग होते हैं?

रोग का नाम	टीकाकरण का समय	टीकाकरण का अंतराल
आंत्र विशाक्ता (एन्टरोटोक्सिमिया)	मई एवं जून में	प्रति वर्ष
पी.पी.आर.	नवम्बर व दिसम्बर	तीन वर्ष के अंतराल पर
एफ.एम.डी. (खुर पका मुंह पका)	सितम्बर एवं फरवरी	6 माह के अंतराल पर
गोट पोक्स (बकरी माता)	फरवरी	प्रति वर्ष

रोगानुसार नियमित टीकाकरण करावें।

चित्र 11.1 : सामान्य बीमारियाँ

मुंह रोग (कंटेजियस एक्थाईमा)

चित्र 11.1 : सामान्य बीमारियाँ

मुंहा रोग : (कंटेजियस एक्थाईमा)

लक्षण :

- यह एक संक्रामक बीमारी है।
- मुंह एवं होठों पर फुंसियाँ हो जाती है और सूखकर खुरंट बन जाते हैं।
- ज्यादा प्रभावित होने पर बकरी चारा खाना कम कर देती है।

उपचार :

- मुंह पर 10 से 20 प्रतिशत लाल दवा (पोटेशियम परमेंग्नेट) का गाढ़ा घोल लगाना चाहिये।
- बिटाडीन मल्हम लगाना चाहिये।
- रोग से प्रभावित बकरियों को तुरंत अलग रखना चाहिये।

चित्र 11.2 : सामान्य बीमारियाँ

आफरा

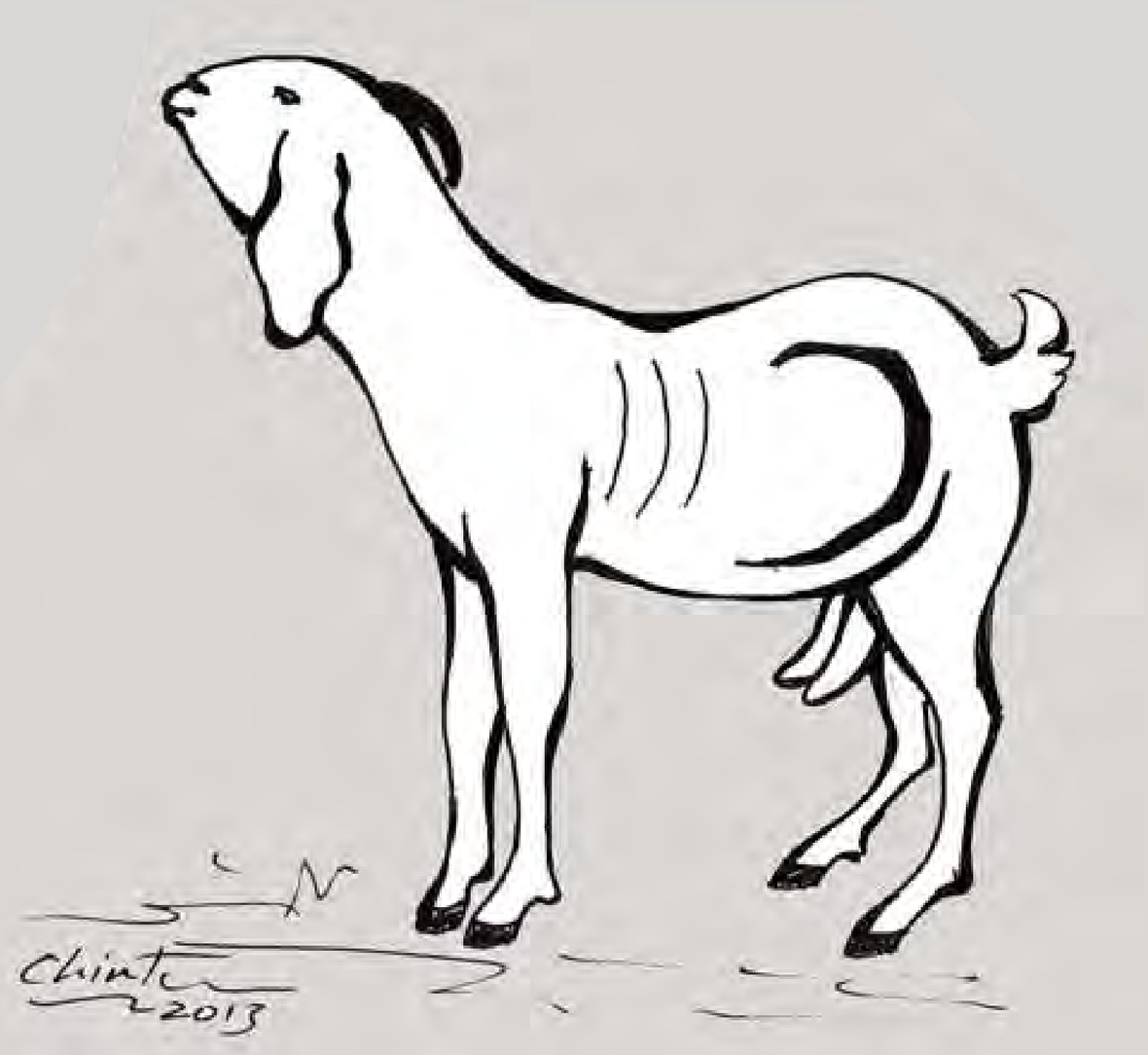

चित्र 11.2 : सामान्य बीमारियाँ

आफरा

अधिक मात्रा में दाना या चारे व बासी चारा खिलाने से आफरा होता है।

लक्षण :

- पेट का बायां हिस्सा फूल जाता है
- बेचैनी होना
- सांस लेने में कठिनाई

उपचार :

- पशु का खाना तुरंत बंद कर देना चाहिये।
- दस्तअवरोधक दवा देनी चाहिये।
- घरेलू उपचार में हींग (2 ग्राम), छाछ (300 एम.एल.) मे मिलाकर पिलावें।
- खाने का तेल (200 एम.एल.) व तारपीन का तेल (10 एम.एल.) मिलाकर पिलावें।
- टिम्पोल पावडर (20 ग्राम) हल्के गुनगुने पानी मे मिलाकर पिलावें।

चित्र 11.3 : सामान्य बीमारियाँ पैर

सडना (खुर गलन, फुट रोट)

चित्र 11.3 : सामान्य बीमारियाँ

पैर सडना : (खुर गलन, फुट रोट)

दल–दली, पानी वाली एवं नमी वाली जगह पर इस बीमारी की संभावना अधिक रहती है।

लक्षण :

- पैर से लंगड़ाना।
- खुर में सड़न, खुर में सूजन एवं घाव व दर्द होना।

उपचार :

- नमी रहित साफ एवं सूखी जगह पर बकरियों को चराना एवं रखना ।
- पोटषियम परमेंगेनेट (लाल दवाई) से खुर को पानी से साफ कर एन्टीसेप्टीक मल्हम लगाना चाहिये।

चित्र 12 : चारा खिलाने का तरीका

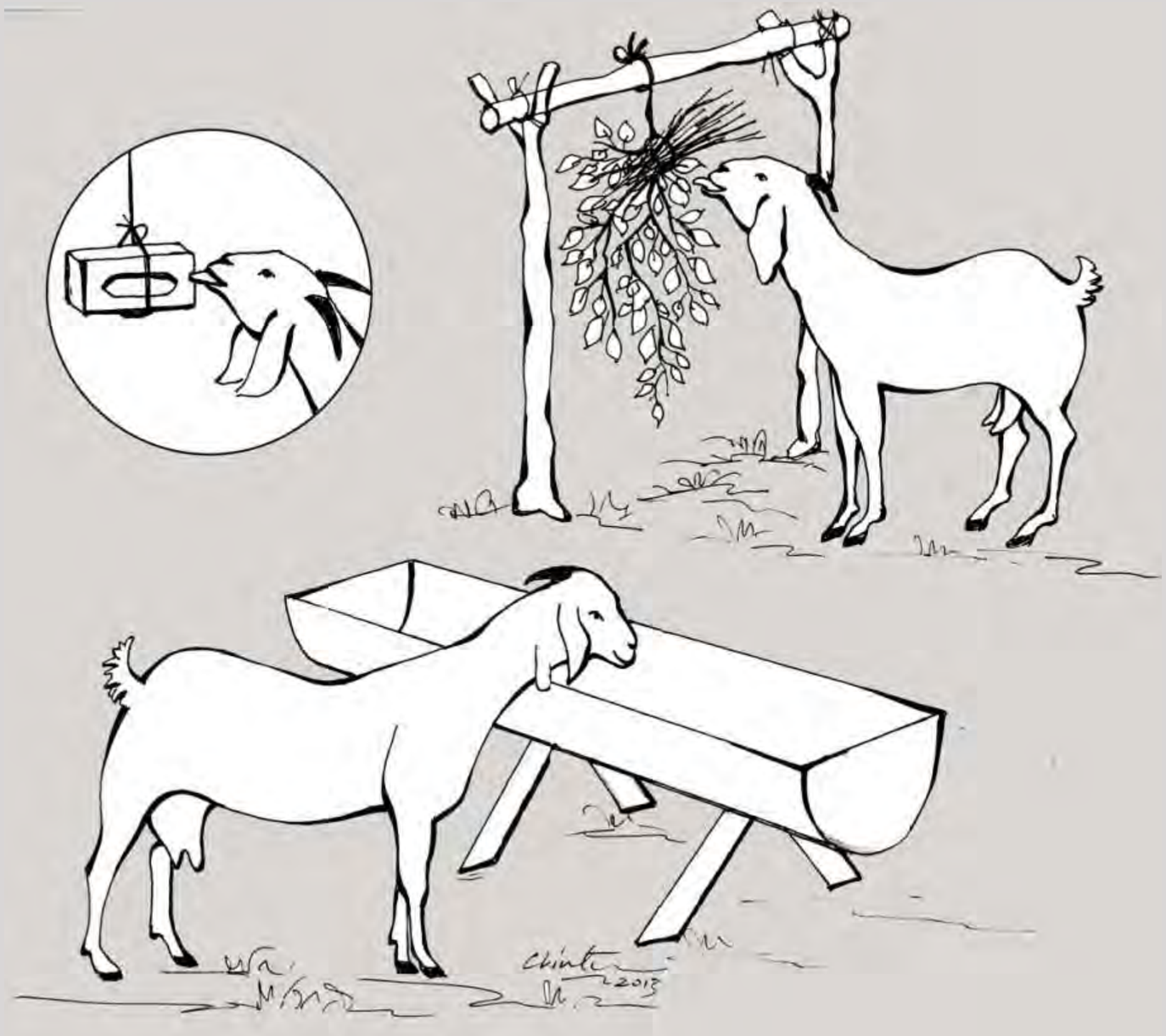

चित्र 12 : चारा खिलाने का तरीका

इस तरह चारा खिलाने से क्या लाभ होता है ?

- चारे का नुकसान कम कर चारे की बचत कर सकते है।
- पेट के रोगों से बचाव होता है।
- बकरी का स्वास्थ्य अच्छा रहता है ।
- दूध उत्पादन में बढ़ोतरी व शारीरिक वृद्धि होती है।
- खनिज लवण ईंट चटाने से शरीर में पोशक तत्वों की आपूर्ति होती है।

बकरियों को निम्नानुसार आहार देना चाहिये।

आहार (प्रतिदिन)	घर पर बांधकर पाली जाने वाली	चराई की जा रही बकरीयों के लिये
हरा चारा	2 से 4 किला	1 से 2 किलो
सूखा चारा	3 से 4 किलो	1 से 2 किलो
पशु आहार	250 ग्रम	250 ग्रम
बीजू बकरे के लिय	400 ग्रम	400 ग्रम

चित्र 13 : बकरी का आवास

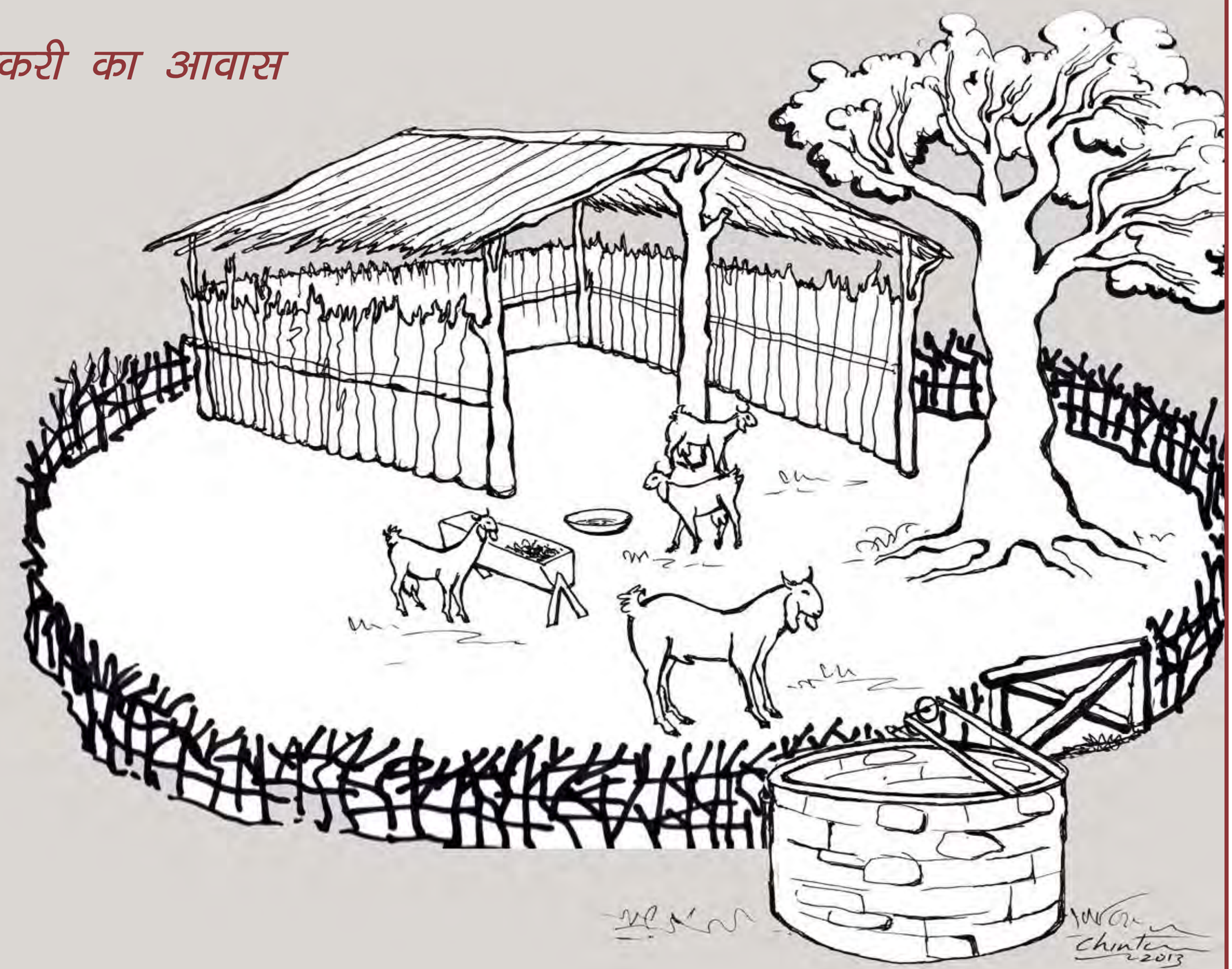

चित्र 13 : बकरी का आवास

बकरी का आवास कैसा हो ?

- छत ऊपर से ढकी हुई होनी चाहिये, चद्दर की जगह छप्पर वाले आवास अच्छे रहते हैं। छप्पर को मिट्टी के गारे, भूसे एवं तारकोल को मिलाकर लेप करके सुधारा जा सकता है।
- आवास छायादार व ऊँची जगह पर बनाना चाहिये, जिससे बारिश में पानी इकट्ठा न हो।
- फर्श मिटटी का बनाना चाहिये।
- आवास में चारा, खली व पानी की सुविधा होनी चाहिये।

चित्र 14 : बाजार व्यवस्था

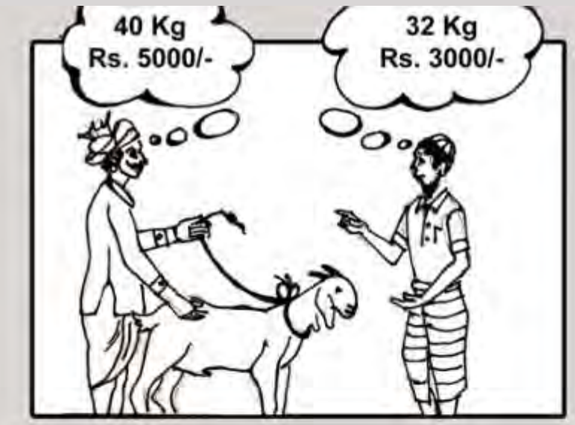

चित्र 14 : बाजार व्यवस्था

परम्परागत बाजार व्यवस्था–ग्राम स्तर पर बकरा या बकरी कैसे बेचते हैं ?

- बकरी पालक को बकरे के वजन की जानकारी नहीं होने से उचित कीमत नहीं मिलना।

बकरे बकरी बेचने का सही तरीका क्या है ?

- बकरे का वजन कर एवं मांस (मीट) का बाजार मूल्य देखकर कीमत तय करने से उचित कीमत प्राप्त कर सकते हैं।

चित्र 15 : संगठित बाजार व्यवस्था

चित्र 15 : संगठित बाजार व्यवस्था

संगठित बाजार व्यवस्था क्या है? कैसे करें?

- स्थानीय बाजार की जानकारी प्राप्त करें।
- गाँव स्तर पर 10 से 15 बकरी पालक मिलकर, बेचने के लिये तैयार किये गये बकरों को बाजार तक सामूहिक रूप से लेकर जावें।
- अच्छी कीमत प्राप्त करने हेतु ईद, नवरात्रा मे बेचने की विशेष तैयारी करें।
- सर्दी के मौसम में अधिक मांग होने से अच्छी कीमत मिलती है।

चित्र 16 : स्वयं सहायता समूह

चित्र 16 : स्वयं सहायता समूह

बकरी पालन स्वयं सहायता समूह क्या है? समूह की जरूरत क्यों?

- बकरी विकास से सम्बन्धित कार्य जैसे कि टीकाकरण, कृमिनाशक दवाई पिलाना, बाह्य परजीवी की रोकथाम आसानी से करने हेतु।
- बकरा उद्यमी बनने एवं ऋण प्राप्त करने हेतु।
- बकरी पालन के विकास व सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये।

चित्र 17 : बकरी विकास मंच (इनोवेशन प्लेटफोर्म)

चित्र 17 : बकरी विकास मंच (इनोवेशन प्लेटफोर्म)

बकरी विकास मंच (इनोवेशन प्लेटफोर्म) क्या है ?
इसमें कौन-कौन सदस्य होते हैं व क्या-क्या कार्य कर सकते हैं ?

- बकरी पालन व्यवसाय से जुड़े हुये लोग, जैसे पशु चिकित्सक, पशु आहार बेचने वाले, पशुओं की दवाई के विक्रेता, व्यापारी, कसाई, बैंकर्स इन्ष्यूरन्स कार्यकर्ता एक साथ एक मंच पर बैठकर बकरी विकास से संबंधित मुददों पर चर्चा करना।
- सभी व्यवसायीओं की समस्याओं पर चर्चा कर विषेशज्ञ से सलाह व सुझाव से उचित समाधान।
- बकरी पालन व्यवसाय में आनेवाली समस्या पर चर्चा, विषेषज्ञ की राय अनुसार कार्य योजना बनाना एवं उस पर अमल करना।